तृतीय अध्याय

अमरकान्त के उपन्यासों में सामाजिक वर्गीय जीवन : प्रमुख समस्यायें

तृतीय अध्याय

अमरकान्त के उपन्यासों में सामाजिक वर्गीय जीवन : प्रमुख समस्यायें

3.1 भूमिका–

निम्नमध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों के जीवन से जुड़े हुए उनके पहलुओं की चर्चा अपने कथा साहित्य के माध्यम से करते हैं। उनके शोषण की कई विचित्र स्थितियों को भी सामने लाते हैं। जैसे कि 'सुन्नर पांडे की पतोहू' उपन्यास में सास का खुद अपने पति से अपनी ही बहू की आबरू लूटने की बात करना या फिर 'मूस' कहानी की परबतिया का अपने पति के लिए ही नई जवान औरत को घर में लाना। लेकिन जहाँ तक अमरकांत के स्त्री सम्बन्धी दृष्टिकोण की बात है तो वह प्रगतिशील ही दिखायी पड़ती है। 'सुरंग' लघु उपन्यास में अमरकांत का यही दृष्टिकोण अधिक मुखरित होता है।

अमरकांत लिखते हैं कि, "इस दुनिया में स्त्री और पुरूष परस्पर विरोधी प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। वे बनावट और प्रकृति में भिन्न होते हुए भी परस्पर सहयोगी, सहभागी एवं संपूरक हैं। उनके मेल से ही एक संपूर्ण संसार बनता है और दूसरा नया संसार निर्मित होने की भूमिका तैयार होती है। स्पष्ट है कि किसी सामाजिक प्रगति या नये समाज के निर्माण में इनका परस्पर स्वैच्छिक, मनपसन्द सहयोग एवं सहभागिता जरूरी है परन्तु आज भी भारतीय समाज में शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, जनतांत्रिक अधिकार, सुरक्षा, न्याय आदि के मामलों में स्त्रियों की अधिकार–प्राप्ति वांछित अनुपात से बहुत कम हैं, अतः दोनों के परस्पर सम्बन्धों के संदर्भ में अमूमन स्त्रियों के विरुद्ध इतना असंतुलन, जोर–जबरदस्ती, पाखण्ड, उत्पीड़न, अन्याय तथा हिंसा है।

(क) अमरकान्त के उपन्यासों में कस्बाई जीवन का यथार्थ चित्रण

शहरी ग्रामीण तथा कस्बाई स्त्रियाँ अमरकांत के उपन्यासों के केंद्र में हैं। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक गुलामी से मुक्ति की छटपटाहट को महसूस करती हैं। वह अपने स्वावलंबी व्यक्तित्व का परिचय देना जानती हैं। सदियों से चली आ रही सामाजिक मान्यताएं जो उसके शोषण का आधार हैं, अब उन्हें मान्य नहीं है। वे स्त्री को दासी तथा गुलाम समझने वाली व्यवस्था के विरुद्ध खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने अधिकारों से परिचित हैं। उन्हें अपमान का जीवन अब मंजूर नहीं है। वह व्यवस्था के साथ स्वयं में बदलाव की स्थिति महसूस करती हैं। उदाहरण स्वरूप 'लहरें' उपन्यास की स्त्री–पात्र सुमित्रा के कथनों को देखा जा सकता है 'दुनिया की स्त्रियों में बदलाव हो रहा है, हम अब भी जहालत में पड़ी हुयी निष्क्रिय हैं और रोज अपमान और मार सह रही हैं। हमको आपस में मिलना–जुलना चाहिए, संगठित होना चाहिए। अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए। इस आजाद और लोकतांत्रिक देश में अपने जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करनी चाहिए, उसके लिए कोशिश करनी चाहिए। जब महिलायें खुद अपनी मानसिकता बदलेंगी तभी कुछ हो सकता है। जरुरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। और अपने तरीकों से गलत बात का जबाब देना चाहिए।[86]

नारी जागरण तथा नारी स्वतंत्रता संबंधी आन्दोलनों ने स्त्रियों में 'स्व' की भावना को जगाया है। उन्हें चेतनाशील बनाया है। सदियों से उनके स्वाभिमान का दलन करने वाली सामाजिक बुराइयों से उनका परिचय कराया है। दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है। इसका खामियाजा आज भी स्त्रियों को भुगतना पड़ रहा है। यह

---

[86] अमरकांत, 'लहरें', अमर कृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला संस्करण 2008, पृ. 27

एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो स्त्रियों के लिए कई तरह की समस्याएं उत्पन्न करती है। कई बार उसे इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है। 'ग्रामसेविका' उपन्यास की नायिका दहेज जैसी कुप्रथा के कारण अपने प्रेमी द्वारा ठुकरा दी जाती है। उसका प्रेमी अतुल उसे छोड़ कर उस लड़की से शादी करता है जिसके माता–पिता उसके परिवार को मोटी रकम दहेज के रूप में अदा करते हैं। संघर्षशील एवं आत्मसजग दमयंती प्रेमी अतुल के फैसले से दुःखी अवश्य होती है, लेकिन अपना आत्मविश्वास नहीं खोती। उसे स्वयं पर विश्वास है उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। आत्मविश्वास से युक्त दमयंती अपनी लड़ाई स्वयं लडना जानती है। वह प्रण लेती है की स्वंय के साथ परिवार की जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करेगी। वह बीमार पिता को आश्वासन देते हुए कहती है 'बाबूजी आप फिक्र ना करें..., मैं नौकरी करूँगी। आप जरुर अच्छे हो जायेंगे। मैं विनय को अधिक से अधिक पड़ाऊँगी।'[87]

अतुल के विश्वासघात से दमयंती टूटती नहीं है। वह और अधिक चेतनाशील हो जाती है। उसके अन्दर सदैव एक आग जलते रहती है। वह उन समस्त सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध दिखाई देती है जो स्त्रियों को गुलामी का एहसास कराती हैं। दहेज जैसी कुप्रथा की शिकार दमयंती निराश नहीं होती 'वह साहस, संघर्ष और कर्मठता का जीवन अपनाकर अपने दुरूख निराशा तथा अपमान का बदला चुकाएगी।'[88]

आत्मविश्वास से युक्त दमयंती ग्रामसेविका की नौकरी प्राप्त कर अपने साथ–साथ भोले–भाले तथा अशिक्षित ग्रामीणों में भी चेतना का संचार करती है। उनके साथ हो रहे शोषण के प्रति उन्हें जागरुक करती है। दमयंती के कारण ही यह संभव

---

[87] अमरकांत, 'ग्रामसेविका', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2008,पृ. 19

[88] अमरकांत, 'ग्रामसेविका', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2008, पृ. 19

हो पाया था कि गाँव के लोग ग्राम–प्रधान के गलत नीतियों का विरोध करने लगे थे। ग्राम–प्रधान की धमकियों से डरे हुए ग्रामीणों को हरचरण समझाते हुए कहता है 'हमें शांति और धैर्य से काम लेना चाहिए' प्रधान हम लोगों से इसलिए नाराज है क्योंकि हम अपनी गरीबी और अज्ञानता को दूर करना चाहते हैं' उसको डर है कि अगर गाँव के लोग तरक्की कर गए तो वह शोषण कैसे कर सकेंगे। गरीबों का शोषण कर के ही तो वह मोटे हुए हैं। वह समझते हैं कि डरा धमका कर मारपीट कर वह जनता को दबा लेंगे। लेकिन यह असंभव है..... गाँव के लोगों को अब अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। उनको पडना लिखना चाहिए, अपने खेतों पर डट के मेहनत करनी चाहिए। मिलजुल कर गाँव के तरक्की के काम करना चाहिए।'[89]

यह नारी चेतना का ही परिणाम है कि आज स्त्री सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, व्यवसायिक तथा वैज्ञानिक हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। वह हर क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है। आत्मबोध तथा आत्मनिर्भरता ने नारी को सर्वाधिक सशक्त बनाया है। वह रूढियों एवं परम्पराओं को खुलकर चुनौती दे रही है। वह समाज के बन्धनों की परवाह न करते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा कर रही है। यह नारी चेतना के कारण ही संभव हुआ है, जहाँ वह ये कहती है कि 'इसमें दोष हमारी सामाजिक व्यवस्था का है, जिसमें स्त्री को मन पसंद पति और पुरूष को मनपसन्द पत्नी चुनने का अधिकार नहीं। त्याग एक बहुत बडा गुण है, पर स्त्री को.... अपने कर्तव्यों के साथ अपने अधिकारों की भी चिंता करनी चाहिए। जो स्त्री अपने को पुरूष की दासी मानती है, वह मुझे जरा भी नहीं जँचती।'[90]

---

89 अमरकांत, 'ग्रामसेविका',राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2008, पृ. 131

90 अमरकांत, 'काले–उजले दिन', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2003, पृ. 162

मुस्लिम स्त्रियों की सामाजिक स्थिति तथा उनमें उत्पन्न चेतना को अमरकांत 'विदा की रात' उपन्यास में दर्शाते हैं। जहाँगीर बेगम डरी सहमी नई नवेली दुल्हन नईमा बेगम को समझाते हुए कहती है 'मैं हवा और रोशनी के बगैर नहीं रह सकती। और न किसी की टेडी–तिरछी बात ही बरदाश्त कर सकती हूँ। मर्द के बेकारए वाहियात शकों–सुबहा पर लानत भेजती हूँ। मुस्लिम खातून हूँ तो अल्लाह ने जो कानून बनाए हैं, उन्हीं पर चलूंगी, मगर अल्लाह ने यह कहाँ कहा है कि औरत जानवर की तरह रहे, ताने, मारपीट और जुल्म सहे... डरना–दबना छोड़ कर हँसो और मुस्कुराओ। लड़के हैं, लडकियां हैं, उनसे बोलो बतिआओ, याद रखो, तुम मुस्लिम खातून हो, भेड़–बकरी नहीं, अल्लाह ने तुम्हारी इज्जत–आबरू और सेहत के लिए बहुत कुछ कहा है। तहजीब और पर्दगी का यह मतलब तो नहीं की बिना हवा और रोशनी के मकान में बंद कर गन्दी? बान के ढेला–पत्थर मारे जाएँ।'[91]

किसी भी समाज की उन्नति–अवनति का कारण वहां की सामाजिक व्यवस्था होती है। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन कर हम समाज और लोगों की सोच बदल सकते हैं। अगर समाज की सोच बदलेगी तो स्त्रियों की दशा भी बदलेगी। किसी देश के वास्तविक विकास से परिचित होने के लिए सर्वप्रथम वहां की स्त्रियों की स्थिति का आकलन करना आवश्यक है, क्योंकि स्त्रियों के विकास की उपेक्षा कर कोई भी समाज आगे नहीं बढ़ सकता। अमरकांत के उपन्यासों की स्त्री पात्र इस बात से अवगत है तभी तो वह समस्त सामाजिक रीतियों को धता बता कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने में विश्वास रखती है और कहती है 'स्त्री कोई काठ की लकड़ी, रेत, पाई नहीं है, उसमें सुन्दर इच्छाएं हैं, स्वाभिमान है विवेक है, अत्याचार और उत्पीड़न के

[91] अमरकांत, 'विदा की रात', अमर कृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला संस्करण 2008, पृ. 57

विरुद्ध घृणा के भाव हैं, राष्ट्र प्रेम और साहित्य प्रेम है.... खूब पढ़–लिखकर,नए ज्ञान–विज्ञान अपनाकर... स्त्री को अपना स्वाभिमान, अपना कद खड़ा करना होगा, रूढ़ियों... का विरोध करना होगा।'[92]

अमरकांत के उपन्यासों की कुछ स्त्री चरित्र अशिक्षित, घरेलू कामकाजी, तथा अन्तर्मुखी हैं। इसके बावजूद उनमें नारी चेतना के भाव को परिलक्षित किया जा सकता है। 'सुन्नर पांडे की पतोहू' उपन्यास की राजलक्ष्मी अशिक्षित होते हुए भी सामाजिक बुराईयों का विरोध करते हुए अपने व्यक्तित्व को प्रमुखता देती है। पति द्वारा त्याग दिए जाने के बावजूद वह किसी के सामने झुकती नहीं है वह अपने अस्मिता और स्वाभिमान की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। जीविकोपार्जन के लिए वह घर–घर खाना बनाने का कार्य करती है। वह जिस भी घर में काम करती वहां उसको हर पुरुष की नियति और नजर में एक ही भाव दिखाई देता, हवस का भाव। वह राजलक्ष्मी को अकेली एवं असहाय समझ नोच खाने को सदैव तत्पर रहते। वे केवल हैसियत से बड़े थे लेकिन स्त्रियों के सन्दर्भ में उनकी सोच बहुत छोटी थी वह स्त्रियों को केवल दासी और भोगविलास की वस्तु समझते थे। राजलक्ष्मी ऐसे लोगो की वास्तविकता को उजागर करते हुए कहती है 'अनेक तरह के लोगों के वहां उसने काम किया। कोई नेता था कोई अफसर, कोई व्यवसायी, कोई अध्यापक और कोई क्लर्क हर जगह लगभग एक ही दृश्य था। जो कुछ ऊपर से दिखाई देता उसका दूसरा रूप भीतर से देखने में आता। बाहर से जो सभी प्रतिष्ठित और साफ–सुथरे नजर आते, वे भीतर बेहद चीखते चिल्लाते थे। लगभग सभी अपनी सीधी–सादी आज्ञाकारी और दिन रात खटने वाली बीबियों को चौबीस घंटे कोसते रहते। उन्हें अन्य तरीकों से प्रताड़ित करते

[92] अमरकांत,'इन्हीं हथियारों से', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2008, पृ. 72

और दूसरे की बहू–बेटियों को अपने जाल में फंसाने की चाल चलते। घरों के अन्दर औरतों की हालत दरबे में बंद मुर्गियों की तरह थी, जहाँ वे आपस में लड़ती, भुनभुनाती खीझतीं, रोतीं कलपती और कराहती।'[93] इस उपन्यास में राजलक्ष्मी का सामाजिक–व्यवस्था के प्रति विद्रोही रूप उभर कर सामने आया है। वह आत्मबोध से परिपूर्ण, कठिन से कठिन परिस्थियों एवं चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए सदैव तैयार रहती है। राजलक्ष्मी के विद्रोही बनने में उसकी परिस्थितियां और परिवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विवाह के बाद किस तरह स्त्री का 'स्वशतिरोहित' हो जाता है, इस प्रश्न को अमरकांत 'लहरें' उपन्यास में बच्ची देवी, विमला तथा सुमित्रा के माध्यम से उठाने का प्रयास करते हैं। विवाह के बाद स्त्री का अपना क्या है। उसका अस्तित्व है की नहीं? आदि सवालों से अमरकांत की स्त्री पात्र टकराते हुए दिखाई देती हैं। विमला द्वारा बच्ची देवी का परिचय और नाम पूछने पर वह कहती है 'खूब कहती हो बहिनी, तुम्ही बताओ, कहीं सुहागिन स्त्री का नाम पूछता है कोई? नाम लेकर बुलाता है कोई भला?'[94] बच्ची देवी के सवाल ने विमला को सोचने पर मजबूर कर दिया और वह अपने स्वंय के अस्तित्व के विषय में सोचने लगती है 'उसे कालोनी की सभी औरतें 'बहनजी' या अठाईस नंबर वाली कहती हैं। उसके पति 'लल्लू की मम्मी' कहते हैं। सास जेठानी दुल्हन और देवरानी भाभी कहती हैं। अपने ही विवाहित जीवन में उसका नाम कैसे गायब हो गया। उसका अपना शौक संगीत छूट गया घर गृहस्थी के चक्कर में, फिर उसका अपना क्या बच रहा है। अवश्य उसके दो बच्चे हैं पर वे अपने कहाँ?

---

93 अमरकांत 'सुन्नर पांडे की पतोह', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2005, पृ. 106

94 अमरकांत, 'लहरें', अमर कृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला संस्करण 2008, पृ. 29

बड़ा गोपाल स्कूल जाता है और वहां वह अपने बाप का लड़का है। यह गोद का लड़का लल्लू भी बड़ा होकर अपने बाप का ही लड़का कहलाएगा। क्या इन्हीं कारणों से सुहागिन स्त्री का कोई नाम नहीं पूछता। यह कोई सामाजिक सम्मान है या स्त्री के निजी अस्तित्व को दूसरों के जीवन में घुला.पचा देने का कोई तरीका।'[95]

चेतनाशील नारी अपने स्वतंत्रता की घोषणा करते हुए समाज से दया नहीं अपने अधिकारों की मांग कर रही है। स्त्रियों को जागरुक होते देख कुछ शिक्षित युवा भी स्त्री चेतना और विकास की जरुरत को अपनी सहमति प्रदान कर रहे हैं, लेकिन ऐसे लोगों की मात्रा हमारे समाज में अभी बहुत कम है। अमरकांत के उपन्यास 'आकाश पक्षी' का पुरूष पात्र रवि स्त्रियों की प्रगति और चेतना पर चर्चा करते हुए कहता है ''जमाना तेजी से बदल रहा है आप देख रही हैं, आज औरतें अधिक से अधिक पड़ रही हैं, ऊँचे–ऊँचे पदों पर काम कर रही हैं। भाषण दे रही हैं, कॉलेज यूनिवर्सिटी में पढ़ा रही हैं। औरत मर्द में कोई उंचा नीचा थोडे है। सभी बराबर हैं। जो काम मर्द कर सकते हैं और करते हैं वही औरत भी कर सकती है और करती है।'[96] रवि के माध्यम से अमरकांत स्त्री संबंधी अपने प्रगतिशील विचारों को सामने रखते हैं।

अंत में स्पष्ट है कि अमरकांत के उपन्यासों की स्त्री पात्र वैविध्यपूर्ण हैं। उनमें शहरी, ग्रामीण, कस्बाई, शिक्षित–अशिक्षित, पत्नी, प्रेमिका, सहेली, पडोसन आदि अनेक प्रकार की स्त्रियाँ हैं। उनकी दृष्टि सजग एवं सकारात्मक है। वह अपना सबल पक्ष रखने से पीछे नहीं हटतीं। उनके उपन्यासों में नारी जीवन की व्यथा, संघर्ष, आशा तथा आकांक्षा सबकुछ है। अमरकांत के उपन्यासों में स्त्रियाँ अपनी समस्याओं को व्यक्त करते हुए शोषण एवं उत्पीडन का पुरजोर विरोध करने की क्षमता रखती हैं। स्त्री जाति

---

[95] अमरकांत, 'लहरें', अमर कृतित्व प्रकाशन, इलहाबाद, पहला संस्करण 2008, पृ. 29,30

[96] अमरकांत, 'आकाश पक्षी', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 2003, पृ. 79

की करुणा, विवशता उसके संघर्ष विद्रोह, जीत–हार हर्ष–विवाद सभी बातें अमरकांत के उपन्यासों में देखने को मिलती हैं। उनके उपन्यासों के स्त्री पात्रों में कहीं विवशता जन्य आकुलता है तो कहीं दृढ साहस एवं बुधिमत्ता। उनमें सीधे–सीधे विरोध के तेवर भी देखने को मिलते हैं। वे शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक उत्पीडन को झेलते हुए इन सबसे मुक्ति का मार्ग भी तलाशती नजर आती हैं। सदियों से शोषण एवं उत्पीडन की शिकार स्त्री में आई चेतना स्वाभाविक सामाजिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि परिस्थितियों की देन है। यह अधिकारों को प्राप्त करने की यात्रा है। यह विद्रोह की यात्रा है। इसमें परिवर्तन के बीज हैं, उम्मीद है, आशा है। इस बात में कोई दो मत नहीं कि आने वाले समय में नए समाज की कल्पना चेतनाशील नारी समुदाय के आभाव में असंभव एवं अकल्पनीय है।

(ख) अमरकान्त के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का स्वरूप और उनके वैकल्पिक समाधान के सूत्र

अमरकान्त केवल निम्न–मध्यवर्गीय कस्बाई कहानीकार नहीं अपितु राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदना के कथाकार हैं। राष्ट्रीय–सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह उनका लेखकीय गुण है। उनके कृतित्व में कथ्य और शिल्प का सुन्दर समन्वय हुआ है। उनका रचना संसार स्वातंत्र्योत्तर भारत का प्रामाणिक दस्तावेज है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आम आदमी में जली उम्मीदों की लौ मद्धिम पड़ने से मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हुई। जन–सामान्य को आर्थिक दबाव झेलते हुए मानसिक संत्रास से गुजरना पड़ा। उनके साहित्य में उच्च, मध्य और निम्न वर्ग की मनोवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं।

प्रेमचंद और यशपाल की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अमरकान्त ने निम्न–मध्य वर्ग को नज़दीक से सिर्फ देखा ही नहीं, बल्कि उनकी पीड़ा को भोगकर महसूस किया है। निम्न वर्ग दो जून की रोटी पाने के लिए जी–तोड़ परिश्रम कर रहा है और मध्यवर्ग

उसका हक दबाए बैठा है। स्वयं मध्य वर्ग प्रदर्शन प्रियता और ढोंग के चलते कुंठा और तनाव का शिकार है। उच्चवर्ग ने निम्न–मध्यवर्ग के शोषण के लिए नए तरीकों को ईजाद किया है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 23 कहता है कि ''मानव का दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम प्रतिषिद्ध किया जाता है और इस उपबंध का कोई भी उल्लंघन अपराध होगा जो विधि के अनुसार दण्डनीय होगा।''[97] मगर संविधान के इस दावे के बावजूद समाज मे आज भी शोषण का सिलसिला बदस्तूर जारी है। ऐसे व्यक्तियों का शोषण इतने महीन स्तरों पर होता है कि इन्हें इसकी भनक भी नहीं लगती है। और यदि इन्हे पता भी चल जाता है तो इनकी दशा इतनी दयनीय है कि ये व्यक्ति अपना शोषण करवाने के लिए मजबूर है। क्योंकि जीने की विवशता इन्हें किसी भी हद तक जाने को मजबूर कर देती है। अमरकान्त हमारे समाज के इस यथार्थ से गहरे रूप में परिचित हैं। शोषित पात्रों के जीवन संघर्ष को उन्होनें बहुत नजदीक से देखा है। उनके उपन्यासों में जो भी शोषित पात्र आए हैं अमरकान्त उनसे बाखूबी परिचित हैं। पात्रों के जीवन संघर्ष को नजदीक से देखने के कारण ही ये पात्र उनके उपन्यासों में जीवंत हो उठे हैं। जिनका पाठकों पर गहरा प्रभाव भी पड़ता हैं।

अमरकान्त ने मध्यवर्गीय व निम्नमध्यवर्गीय समाज मे व्याप्त बेबसी, निर्धनता, शोषण, अंधविश्वास इत्यादि का संवेदनात्मक चित्रण किया है।

3.1 निम्न मध्यवर्ग

मध्यवर्गीय समाज का निचला हिस्सा ही निम्न मध्यवर्ग के रूप में जाना जाता है। उच्च वर्ग की तुलना में इस वर्ग की जनसंख्या बहुत अधिक है। यह वर्ग केवल

---

[97] डॉ. जय जय राम उपाध्याय, भारत का संविधान, सेन्ट्रल ला एजेन्सी, इलाहाबाद–2013, पृ0–13

ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी फैला हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसान, मजदूर, पाण्डे–पुरोहित छोटे महाजन आदि हैं तो शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत मुंशी, मुनीम, मासिक वेतन भोगी, कर्मचारी, दुकानदार, छोटे व्यापारी आदि आते हैं।

पूँजीवाद के फलस्वरूप ही मध्यवर्ग का जन्म हुआ है। सामन्ती व्यवस्था में जो निम्न वर्ग माने गए पूँजीवादी व्यवस्था में उसी निम्न वर्ग का स्थान निम्न मध्यवर्ग ने ले लिया है। पूँजीवादी व्यवस्था में कुछ ही लोगों के हाथों में पूँजी आ जाने के कारण वे धनवान तो होते ही हैं, साथ ही शक्तिशाली भी हो जाते हैं। इस स्थिति में अनेक लोगों का आर्थिक स्तर गिरने लगता है। "पश्चिम में पूँजीवाद के क्रान्तिकारी चरित्र के साथ मध्यवर्ग का जन्म होता है, जबकि भारत में औपनिवेशिक तन्त्र के तहत यह वर्ग अस्तित्व में आया।"[98] "तथा कथित परम्पराओं, कुलीनताओं एवं जर्जर रूढ़िग्रस्त मर्यादाओं का बोझ ढोने का काम इसी वर्ग के कंधों पर होता है।"[99] यह वर्ग आजन्म संघर्षशील रहता है। उच्च वर्ग इसका सर्वाधिक शोषण करता है। इसीलिए यह वर्ग उच्च वर्ग से सदैव घृणा करता है।

'ग्रामसेविका' उपन्यास में प्रधान निम्न मध्यवर्गीय लोगों का विभिन्न विधियों द्वारा शोषण करते हैं। जिसका प्रतिकार दमयन्ती के साथ–साथ निम्न मध्यवर्गीय जंगी, हरचरण, धनराज भी करते हैं। निम्न मध्यवर्गीय समाज अंधविश्वास से ग्रसित रहता है

जिसका फायदा उसके ही वर्ग के लोग उठाते हैं। "झींगुर सोखा एक दुबले–पतले अहिर थे। उनके बाल साधुओं की तरह लटियाये हुए रहते थे। वह बेहद नाटे थे और उनकी आँखें बहुत छोटी–छोटी थीं, जिनको देखकर ऐसा लगता था कि

---

98 प्रतिमान (त्रैमासिक, अंक–5) ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृ.12–13

99 राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन : अर्जुन चौहान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1995, पृ. 80

वह दिमाग से नहीं बल्कि आँखों से ही सोचते हैं। वह भूतों को वश में करके बाँध देते थे।"[100] इस वर्ग में सबसे ज्यादा जाति–पांति की भावना भी पाई जाती है। दमयन्ती जब ग्राम सेविका बनकर गाँव में जाती है तो सभी उससे जाति सूचक ही प्रश्न पूछते हैं। यथा–

"कौन बिरादर हो , बहिन जी?"प्रौढ़ाओं में से एक ने मुश्किल से अपनी आँखें उठाकर पूछा।

"ठाकुर।"

तीनों औरतों ने मतलब भरी दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखा।

"शादी हो चुकी है?"

"नहीं।" उस औरत की आवाज में जो अपेक्षा और व्यंग्य था उससे दमयन्ती का मुँह तमतमा उठा।

"साथ में कोई और है?"

"छोटा भाई है।"

"उम्र क्या है उसकी?"

"पन्द्रह–सोलह साल का है।"

"सगा भाई है या.....?" बीच में हस्तक्षेप करके बुढ़िया ने कड़ी आवाज में पूछा।

"सगा भाई है।" दमयन्ती का स्वर न मालूम एक कैसे भय से काँप उठा।

"साथ में किसी और को क्यों नहीं रख लेती?"

---

[100] ग्राम सेविका : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ. 06

"घर में कोई और नहीं। माँ मर चुकी है। एक बूढ़ी दादी है जो किसी तरह गृहस्थी का काम देखती हैं.....।"

"अरे मिसिराइन जी, चलो चलें। मुझको घर पर बहुत काम है....मैं दूसरों की तरह फालतू थोड़े ही हूँ कि सारा गाँव नाचती फिरूँ..... ये बहिन जी हवा–पानी बदलने आई हैं.....।"[101]

ग्राम सेविका उपन्यास में निम्न मध्यवर्ग में व्याप्त मिसिराइन और झींगुर, टोना–टोटका के लिए पूरे गाँव में मशहूर थे। निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विपन्नता का भी वर्णन अमरकान्त कई संदर्भों में करते हैं। ऐसे में "उन बच्चों की मम्मी भी, जो अपने लड़कों को स्कूल नहीं भेजतीं, उनको गिलास या कटोरा पकड़ा देतीं और उनको ठेल कर कहतीं, "जा, दूध ले आ स्कूल से।"[102] निम्न मध्यवर्गीय जीवन से सम्बन्धित ऐसे अनेक प्रसंग अमरकान्त ने ग्राम सेविका में चित्रित किए हैं।

3.2 मध्यवर्ग–

अमरकान्त ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय फैमिली की कंगाली, भूखापन, जीवन संघर्ष को एक कडवी सच्चाई के रूप में भारतीय समाज के सामने पेश किया है। उन्होंने मध्यवर्गीय फैमिली की जिन्दगी के चित्रण को बहुत ही समीप से अपनी तेजतर्रार दृष्टि से देखा है, और उन्होंने जिस तरह से देखा है वैसा ही भारतीय समाज के समाने पेश किया है। इसलिये उनके उपन्यास की रचनाएं तल्ख यथार्थ को आईना दिखाने वाली रचनाएं है।

---

[101] ग्राम सेविका : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008, पृ. 06

[102] आकाश पक्षी : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2003, पृ. 162

'काले–उजले दिन' उपन्यास में भी आदमी का दूसरी औरत से शारारिक सम्बन्ध हो जाने के कारण पारिवारिक जीवन नरकीय हो जाता है। उपन्यास के नायक की धर्मपत्नी कान्ति को अपने आदमी के अवैध सम्बन्ध के विषय में जानकारी हो जाती है। फलतः कान्ति अपने शरीर के प्रति उदासीन जाती है। शनै–शनै उसका शरीर गिरता चला जाता है। उसे ट्यूमर हो जाता है और वह मर जाती है। अपने पति से मिले इस धोखे के बाद भी कांन्ति अपने आप को ही कसूरवार ठहराती है। ''मैं सब से परिचित हूं रजनी ! ये तुम्हारे को बहुत ही प्यार करते हैं। जबकि शुरूआत में यह समझती थी इसमें किसी का भी दोष देना ठीक नहीं। रजनी, यह सब मेरे कर्मों का ही दोष है.. मेरा नसीब ही खराब है। मेरे दिमाग में आ गया था कि मैं इनके काबिल नहीं हूँ।''[103]

इस तरह समग्र रूप से अमरकांत के कथा साहित्य को देखते हुए हम कह सकते हैं कि अमरकांत का नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रगतिशील है। वे स्त्रियों को समान अवसर, शिक्षा, सुरक्षा, न्याय, स्वैच्छिक सहभागिता और उनके आर्थिक स्वावलंबन के हिमायती हैं। वे स्त्री–पुरूष को परस्पर विरोधी प्रतिस्पर्धी नहीं मानते। वे दोनों को एक दूसरे का परस्पर सहयोगी, सहभागी एवं संपूरक मानते हैं। साथ ही साथ 'सुरंगृ जैसे लघु उपन्यास के माध्यम से वे स्त्रियों के संगठित होकर अधिकारों के लिए लड़ने के भी पक्षधर दिखायी पड़ते हैं।

स्पष्ट है कि अमरकांत महिलाओं के अधिकारों, सुरक्षा, न्याय, आर्थिक स्वावलंबन और स्वैच्छिक तथा मनपसन्द सहभागिता की बात करते हुए 'स्त्री विमर्श को लेकर चल रही विचारधारा में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। वैसे भी स्त्री विमर्श पुरूषों के समक्ष स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक समानता हेतु किये

[103] अमरकान्त, काले–उजले दिन (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति–2014, पेज–132

जा रहे आन्दोलन का ही नाम है। परितोष बैनर्जी इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि, "नारीवाद'' एक विशिष्ट मतवाद है जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरुष शासित समाज में निम्न स्थान दिया गया है और पुरुषों के साथ समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। अन्य शब्दों में, नारीवाद उस प्रवृत्ति का द्योतक है जो लिंग पर आधारित पारम्परिक शक्ति–व्यवस्था का पुनर्विन्यास चाहती है।' अमरकांत का यह लघु उपन्यास 'सुरंग' नारी मन के आन्दोलित स्वरूप की झलक प्रस्तुत करता है। उपन्यास की पात्र 'बच्ची देवी शिक्षा ग्रहण करते हुए, मोहल्ले की स्त्रियों की मदद से बड़े ही सकारात्मक रूप में अपने वांछित अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ती है।

उपन्यास साहित्य का भारतीय स्वरुप –

अमरकान्त के उपन्यास की एक सबसे बड़ी–विशेषता यह है कि किसी पात्र विशेष की परेशानियों का असर–उसके पूरे परिवार पर दिखायी पड़ता है। अमरकान्त का 'रजुआ' जैसा पात्र भी अपने चाचा को यह सही खबर पहुँचाना चाहता है। कि वह जिंदा है। यद्यपि वह परिवार जैसी इकाई से कोसों दूर है। फिर भी उसे लगता है कि उसके मरने की झूठी खबर के बाद एक सच्ची खबर चाचा तक अवश्य पहुँचनी चाहिए।

अमरकान्त के पात्र अपने परिवार से जुड़े है। उन्हें–अपनी सामाजिकता, गाँव–जवार, रीति–रिवाज आदि का ख्याल है। पूँजीगत समाज का आत्मकेन्दित पात्र भी अपनी सामाजिक परिधि–को लाँघने का खुलेतौर पर प्रयास नहीं कर पाता। विशेष तौर पर मध्यम–वर्ग की यही स्थिति है। अमरकान्त ने भारतीय समाज का यही चेहरा अपने कथा साहित्य के माध्यम से सामने लाया है।

आजादी के बाद देश में शिक्षा के माध्यम से एक नई स्थिति उत्पन्न हुई। अब

स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही शिक्षा लेने की छूट भी। स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण कर रही थी। घर–परिवार के सीमित दायरे से निकलकर उसीलिए ज्ञान–विज्ञान को आत्म–साथ कर रहीं थी। उनका व्यक्तित्व निखर रहा था। ग्रमीण आचलों से आये युवक शहरों की इन नयी लड़कियों की ओर आकर्षित हो रहे थे। उनके के लिए सर्वस्व व्यागने का संकल्प कर रहे थे। गाँव की अशिक्षित पर संस्कारी और पूरी तरह समर्पित लड़कियों की तुलना में नव युवकों का आकर्षण इन पढ़ी–लिखी स्त्रियों की –तरफ अधिक था। इन्हें बोलने–बतियाने का तरीका मालूम था। ये देश–विदेश की गंभीर से गंभीर समस्या पर बहस कर सकती थी। प्रेम के उदात्त भाव को समझ सकती थीं। फिर में उन ग्रामीण स्त्रियों की तुलना में आकर्षक और मोहक थीं। इनके– अंदर अदाओं की जादूगरी थी। दूसरी तरफ एक सच्चाई यह भी थी कि अब स्त्रियों के शिक्षित होने और रोजगार तथा शहरीकरण की नयी स्थितियों के बीच भारतीय समाज में कुछ नये संबंध भी बड़ी तेजी से विकसित हो रहे थे। 'प्रेम' कम संबंध ऐसा ही एक अनोखा संबंध था। यह संबंध–परंपराओं और जाति–धर्म के बंधन को तोड़ने के लिए तैयार थी। लेकिन यह तैयारी मानसिक स्तर पर अधिक और यथार्थ रुप में न के बराबर थी। प्यार में बड़ी–बड़ी कसमें–खाने वाला नायक अचानक अपनी परिस्थितियों के आगे मजबूर होकर टूट जाता। वह नायिका को ही असभ्य और संस्कारहीन मानने लगता। कई बार यही प्रेम पारिवारिक दायित्वों के आगे भी दबा दिया जाता। नये और पुराने संबंधों के बीच पिस रहे युवा समाज की इसी अजीबों–गरीब कश्मकश को अमरकान्त ने अपनी–अधिकांश कहानियों तथा उपन्यासों के माध्यम से सामने लाये हैं।

अमरकान्त महानगरीय में अकेलेपन और अजनबीपन का चित्रण नहीं करते क्योंकि महानगरों की जीवन शैली पर उन्होंने कथानक नहीं गढ़े हैं। फिर भी छोटे कस्बों और शहरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय और निम्नमध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से ही

अमरकान्त कस्बाई या शहरी संस्कृति में पनप रही–नयी विसंगत स्थितियों की तरफ इशारा जरुर करते हैं। आर्थिक एवम् पारिवारिक कारणों से जब कोई व्यक्ति अपना गाँव छोड़कर नई जगह आता है तो उसे किस–किस तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं इसे अमरकान्त के कथासाहित्य के माध्यम से–आसानी से समझा जा सकता है। 'सुन्नर पांडे की पतोह' जैसे उपन्यासों में इसी समस्या पर विस्तार से चर्चा की गयी है। टूटते संयुक्त परिवारों एवम् बदलते आर्थिक परिदृश्य में रिश्तों को भी किस तरह 'अर्थ' के ही ईद–गिर्द आँका जाने लगा है, इसे अमरकान्त ने कई कहानियों के माध्यम से सामने लाया है। ये सब स्थितियाँ भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर दिखलाती हैं।

अतः समग्र रुप से हम कह सकते हैं कि अमरकान्त के कथा साहित्य के माध्यम से भरतीय समाज की वास्तविक तस्वीर उभर कर सामने आती है। अमरकान्त के साहित्य का स्वरुप पूर्णतः भारतीय है।

भारतीयता के प्रति निष्ठा –

आजादी के बाद भारतीय समाज में जो बदलाव हो रहा था अमरकान्त उसके प्रति सजग थे। सामान्य भारतीय जनमानस की निराशा, हताशा और कुंठा के कारण को वे अच्छी तरह समझ रहे थे। ऐसे में अपने कथा साहित्य के माध्यम से अमरकान्त ने पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ–आम आदमी की इन्हीं परेशानियों को मुखर किया। वे यथार्थ–की जमीन पर खड़े थे और सामाजिक शोषण, व्यवस्था–की असफलता को बिना किसी संकोच के अपने–कथ्य के माध्यम से सामने ला रहे थे।

ऐसे में उन्होंने कभी भी कोरी भावुकता, आदर्श एवम् अनौतिक लगनेवाले वासनाग्रस्त स्थितियों का चित्रण अपने साहित्य में नहीं किया। कहीं ऐसे प्रसंग आये भी हैं तो पात्र विशेष की मानसिकता की कलई खोलने के लिए ही। अमरकान्त ने संयमित

होकर सपाट कथानक के माध्यम से बिल्कुल सहज और सरल तरीके से भारतीय समाज में व्याप्त निराशा, हताशा, कुंठा, मोहभंग इत्यादि को कथ्य गत स्वरुप में सामने लाते हैं।

अमरकान्त ने ''अपने समाज की वास्तविकता को हिंदी के अधिकांश उपन्यासकारों की अपेक्षा अधिक गहराई और सच्चाई से देखा है। पुत्र की आर्थिक और सामाजिक उन्नति से उसकी अपेक्षा माँ–बाप को अधिक प्रसन्नता नहीं होगी – ऐसा कौन कह सकता है, और उन्नति की आशा टूट जाने पर उसे पुत्र की अपेक्षा अधिक संताप नहीं होगा – यह कौन मानेगा? लेकीन इसका चित्रण अमरकान्त के यहाँ ही मिलता है। माँ–बाप और संतान की जैसी ही स्थिति पति–पत्नी संबंधो की रागात्मकता की भी है। पति के सुख–दुख उसके उत्कर्ष–अपकर्ष का प्रभाव पत्नी पर पति की अपेक्षा कम नहीं पड़ता।''[104]

भारतीय समाज की परंपरा, रीति–रिवाज,संस्कृति, अंधविश्वास, रुढ़ियों, बदलते सामाजिक स्वरुप और नयी व्यवस्था के बीच पनपते–असंतोष, भ्रष्टाचार आदि सभी बातों को ही तो–अमरकान्त अपने कथा साहित्य के माध्यम से–सामने लाते हैं। 'लेखन कार्य' को अमरकांत एक–हथियार की तरह उपयोग में ला रहें जो आम भारतीय व्यक्ति की लड़ाई में उसकी तरफ होकर अपने तरीके से उसकी मदद करने के लिए तत्पर है। यह भारतीयता के प्रति उनकी लेखकीय निष्ठा ही कही जायेगी।

अमरकान्त के उपन्यासों में समाज में व्याप्त कुरूतियों, परम्पराओं, आडम्बरों, अंधविश्वासों के प्रति कुठाराघात दिखता है। आपने अपनी भाषा को मनोरंजनवादी दृष्टिकोण से अलग किया है वे सामाजिक यथार्थ के सशक्त सिपाहसलाह है। कलम

---

[104] अमरकांत. (2013). शुभचिंता. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, पहला खंड. पृ. 129

उनकी बंदूक है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों और मान्यताओं पर आप अपनी कलम से प्रहार करते हैं। मध्यम वर्ग अपनी कुंठाओं, अभिलाषाओं, निराशावाद, आडम्बर और काल्पनिक परम्पराओं में आकण्ठ डूबा हुआ है। परिश्रम से दूर भागता है और भाग्य को दोष देता है। भाग्यवाद और अंधविश्वास के चक्कर में पड़कर वह परिश्रम से दूर भागता है।

'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में आपने यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया है। अध्यात्म और परिश्रम से ही इच्छित फल की प्राप्ति होती है। ऐसा कोई चमत्कार नहीं है कि आप बैठे–बैठे अचानक से अमीर हो जायें।

अमरकान्त ने इस दृष्टिकोण से यह कहा है कि–

''स्वामी वीरेश्वरानंद ने एक व्यापारी की समस्या का समाधान करते हुए बताया, कोई ऐसा मन्त्र, पूजा–पाठ नहीं है, जो चमत्कार करके आपका धन बढ़ा दे। परिश्रम, बुद्धिमानी, सही पूँजी निवेश, धैर्य, संग्रह–वृत्ति की वजह से धन में वृद्धि होती है। लापरवाही, आलस्य और अपव्यय छोड़ दीजिए। रोज सच्चे मन आधा घंटा रामचरितमानस का पाठ कीजिए। इससे मन को शांति मिलेगी और बुद्धि खुलेगी। व्यापार का उद्देश्य मानव कल्याण ही है। बेईमानी, लूट–खसोट और घटिया तरीके से किया गया धन्धा, व्यापार नहीं है।''[105]

देश कल्याण की यथार्थवादी दृष्टिकोण के रूप में आप पुनः स्पष्ट करते हैं कि प्रशिक्षण, संगीत, योग, प्रयास, अभ्यास से मानव बुद्धि का विकास होता है। सीखने की ललक हमारे देश की सर्वोत्तम परम्पराओं में से है। शारीरिक, मानसिक रूप से मजबूत

---

[105] अमरकान्त : इन्हीं हथियरों से : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2008, पृ.52

बनकर, मानव और प्रभु–प्रेम से अनुप्रेरित होकर, परिश्रम, सच्चाई की राह पर चलने से देश, मानव कल्याण होगा।

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यिक रचनायें लेखकों की सच्ची अनुभूति की दास्तान है। लेखक का यथा संभव प्रयास रहता है कि वह अपनी रचनाओं में मौलिकता और समाज की यथार्थ दृष्टि को प्रस्तुत करें। इस दृष्टि से अमरकान्त के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न स्वरूप स्वतः ही प्रकट होने लगते हैं। आपके उपन्यासों में सामाजिक व्यथाओं की सच्ची अनुभूति छुपी हुई है। सामन्तवाद, रईसों के विलासितापूर्ण जीवन से मध्यम निम्न वर्ग का जीवन तबाह और बर्बाद हो रहा है। जिसके चलते नारी शोषण, वेश्यावृत्ति, भोग–विलास की प्रवृत्ति को समाज में प्रमुख स्थान मिला। लेखक ने स्त्री समस्या के लिए समाज में व्याप्त भोगवाद को जिम्मेदार ठहराया है।

''हमारे आज के गुलाम देश और समाज में पतित सामन्तों और रईसों, आलसी और कामचोर लोगों, रिश्वतखोरों, उद्देश्यहीन लफंगों और दुष्टों की संतुष्टि के लिए वेश्यावृत्ति कायम है। पेट के लिए असंख्य स्त्रियाँ जिस्म बेचने को मजबूर हैं। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? एक तो गरीबी है ही, दूसरे पुरूष समाज का स्वार्थ।

यह समाज स्त्रियों का सम्मान नहीं करता। खरीद–फरोख्त की वस्तु समझकर उन्हें शोषण का शिकार बनाता है। शायद आजादी मिलने पर स्त्रियों की उन्नति की परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी और उन्हें वह इज्जत मिलेगी जैसी हजारों वर्ष पहले रही होगी।''[106]

[106] अमरकान्त, ग्राम सेविका, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008, 203

अमरकान्त ने मध्यम वर्ग की समस्याओं, मनोविज्ञान को लेकर अपने कथा–साहित्य की रचना की है। आपकी भाषा में सामाजिक परिवर्तन की तीव्र इच्छा परिलक्षित होती है किन्तु उनकी अपनी दुर्बलताएँ समाज की चिंता मध्यम वर्ग की अपनी चिंता है। 'सूखा पत्ता' में कृष्णकांत कहता है– ''जाति को मैं नहीं मानता, ... जाति एक सामाजिक ढ़कोसला है, अपने अहंकार को कमजोर किया। कुछ साधन सम्पन्न लोगों ने कमजोरों को दबाना चाहा और इसके लिए उनकी सीमाएँ निश्चित कर दीं। इस संसार में दो ही जातियाँ हैं, एक अच्छे लोगों की दूसरी बुरे लोगों की, एक साधन सम्पन्न लोगों की और दूसरी साधन–विहीन लोगों की।''[107]

अमरकान्त के इस उपन्यास में सामाजिक विदूपकाओं का चित्रण मिलता है। मध्यम वर्ग जाति व्यवस्था से ग्रस्त है। वह चाहते हुये भी इस सामाजिक संरचना से दूर नहीं हो सकता है। अमरकान्त का उपन्यास प्रगतिशीलता का परिचायक है क्योंकि इसमें सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का यथार्थ आह्वान दिखता है। जाति व्यवस्था के कारण ही मनुष्य अपने को दूसरे मनुष्य से श्रेष्ठ समझता है। उच्च जातियों में भी व्याभिचारी मिलते हैं और निम्न जातियों में भी संत मिलते हैं। मनुष्य जाति से नहीं कर्म से महान् होता है किन्तु यह बात वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सटीक नहीं बैठती है क्योंकि पढ़े–लिखे लोगों में जातियता को लेकर संकीर्णता का भाव उत्पन्न हो रहा है। समाज का मध्यम वर्ग इस बात से डरता है और जातियता से बाहर नहीं निकल पा रहा है।

'आकाश पक्षी' उपन्यास की औपन्यासिक संरचना सामंतवाद की बुराईयों को प्रस्तुत करती है। सामंतवाद समाज के लिए खतरनाक है। सामंतवाद सामाजिक शोषण का द्योतक है। आजादी के बाद सामंतों का पतन हो गया किन्तु उनके वंशज आज भी

---

[107] अमरकान्त : सूखा पत्ता : राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984, पृ.161

समाज में कोढ़ की भांति चिपके हुये हैं। समाज में सामंती प्रवृत्ति की दीवारें ढह गई हैं। समाज बदल रहा है। अमरकान्त 'आकाश पक्षी' में यही बताना चाह रहे हैं कि समाज की मान्यताएँ बदल रही हैं। भारतीय समाज में रूढ़ियों और कुरूतियों को समाप्त करने के लिए आंदोलन की आवश्यकता है। सामंतवादी संवाहकों के कारण ही देश सदियों गुलाम रहा है। लेखक की यही विचारधारा है कि सामंतवादी बंधन को तोड़ना होगा तभी जन–जन में समानता, एकता, राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास होगा। रवि कहता है कि–''सामंतवाद ने हमारे देश को टुकड़े–टुकड़े कर रखा है। उसी की वजह से हमारे देश को गुलामी की जंजीरों से जकड़ना पड़ा। सामन्तवाद और उसकी परम्परा को छोड़े बिना उसके खिलाफ संघर्ष किये बिना हमारे देश में एकता कायम नहीं हो सकती। हमारा देश तरक्की नहीं कर सकता। जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि समस्यायें इसी सामंतवादी समस्या से जुड़ी हुयी है, हमें इसके खिलाफ लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।''[108]

लेखक का मानना है कि केवल शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन नहीं होता बल्कि शिक्षा के साथ सही समझ भी होनी चाहिए क्योंकि अधिकांश शिक्षाविद् सामंतों के प्रवर्त्तक ही होते हैं। उनके विरोधी नहीं होते हैं। मध्यमवर्ग की सबसे बड़ी समस्या है कि वह समाज की बुराईयों का संवहक होता है। उसमें अंधभक्ति और अंधश्रद्धा का भाव होता है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास के लिए यह भावना अवरोधक उत्पन्न करती है।

---

[108] अमरकान्त – आकाश पक्षी : राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 69

निष्कर्ष–

शोधार्थी ने शोध के द्वारा निष्कर्ष निकाला कि अमरकान्त निम्नमध्यवर्गीय परिवार में जीवन जीने वालो की विसंगतियों, आडम्बरों, विडम्बनाओं तथा अन्तर्विरोधों पर तेज दृष्टि रखते हुए हंसी वाले लहजे में प्रहार करते हैं। अमरकान्त जी के कथा–साहित्य में सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं की ओर इशारे तो मिलते हैं, किन्तु एक सूत्रता नहीं दिखायी पड़ती है। उन्होंने समाजिक लोगों के संघर्षों के साथ–साथ उनके अडियलपने को भी दर्शाया है। यह उनके शोध साहित्य की बड़ी उपलब्धि है।